समीक्षावाद (Criticism)

इमानुएल कांट के ज्ञान सिद्धांत को समीक्षावाद, आलोचनावाद, समन्वयवाद आदि नामों से जाना जाता है| समीक्षावाद वह ज्ञान शास्त्रीय सिद्धांत है जिसके अनुसार ज्ञान के साधन के रूप में तो सिर्फ बुद्धि पर्याप्त है और न सिर्फ अनुभव, बल्कि ज्ञान की उत्पत्ति में दोनों का सहयोग अति आवश्यक है| इसलिए दोनों ही ज्ञान के लिए अति आवश्यक साधन हैं| समीक्षावाद बुद्धिवाद तथा अनुभववाद की एकांगिकता को दूर कर दोनों में समन्वय स्थापित करने की चेष्टा करता है| समीक्षावाद के अनुसार ज्ञान के लिए अनुभव तथा बुद्धि दोनों अनिवार्य है, परंतु अपने आप में दोनों में से कोई पर्याप्त नहीं है| कांट बुद्धिवाद और अनुभववाद की ज्ञानमीमांसीय खामियों को उजागर करते हैं| वे कहते हैं कि बुद्धिवाद और अनुभववाद आंशिक रूप से सत्य हैं| दोनों सिद्धांत उन बातों के लिए सही है जिनका वे स्वीकार करते हैं एवं उन बातों के लिए गलत जिनका वे बहिष्कार करते हैं| अर्थात जहां तक य सिद्धांत जाते हैं, वहां तक ठीक हैं, परंतु जिसे वे छोड़ देते हैं, अर्थात जिसकी वे अवहेलना करते हैं, उसी में उनकी भूल है| बुद्धि ज्ञान का साधन है यह ठीक है पर अनुभव ज्ञान का साधन है यह भी ठीक है| लेकिन बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों एक दूसरे के विपरीत एवं विरोधी सिद्धांत हैं और दोनों ही एक दूसरे का खंडन और बहिष्कार करते हैं| कांट कहते हैं केवल बुद्धि अथवा अनुभव हमारे ज्ञान के साधन नहीं हो सकते परंतु दोनों मिलकर ज्ञान की उत्पत्ति करते हैं| ज्ञान का प्रारंभ अनुभव से होता है, परंतु वहीं से बुद्धि की सक्रियता प्रारंभ हो जाती है| बिना बुद्धि के आकारों के लागू किए अनुभव प्राप्त नहीं हो सकते| इस प्रकार अनुभव के स्तर से ही बुद्धि क्रियाशील हो जाती है और बाद में बुद्धि का हाथ अथवा भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाता है|

बुद्धिवाद एकमात्र यथार्थ ज्ञान का स्रोत तर्क बुद्धि को मानता है| उसके अनुसार बुद्धि स्वत: सिद्ध आर सार्वभौम नियमों द्वारा यथार्थ तत्व ज्ञान प्राप्त कर सकती है| इसके विपरीत अनुभववाद ने ज्ञान का एकमात्र स्रोत अनुभव (इंद्रिय अनुभव) को ही माना है| इसके अनुसार बुद्धि की कोई नियम तो अनुभव निरपेक्ष हो सकते हैं और ना ही जन्मजात या सहज हो सकते हैं| कांट का मानना था- बुद्धिवाद तथा अनुभववाद ने ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान की संभावना, मनुष्य के ज्ञान प्राप्ति की क्षमता तथा उसकी सीमा आदि की परीक्षा कीजिए बिना सीधे अपने ज्ञान का साधन संबंधी मत प्रस्तुत कर दिया| कांट इन सारी बातों की पहले समीक्षा कर अपने ज्ञान के सिद्धांत का प्रतिपादन करते हैं| कांट अपने पूर्ववर्ती दोनों मतों को रूढ़िवादी मानते हैं| कांट के मत में बुद्धिवाद का अंत अंधविश्वास में हुआ और अनुभववाद का अंत संदेही बाद में हो गया| कांट के अनुसार तत्व समीक्षा के पूर्व ज्ञान समीक्षा अत्यंत आवश्यक है| ज्ञान की उत्पत्ति प्रमाणय और सीमा जान लेना दर्शन का सर्वप्रथम कार्य होना चाहिए| लॉक ने तत्व मीमांसा के पहले ज्ञान मीमांसा को आवश्यक और महत्वपूर्ण माना तथा पीपल की प्रणाली केवल मनोवैज्ञानिक विश्लेषण मात्र रह गई और वे ज्ञान की सही आलोचना नहीं कर पाए| यही कारण था कि लोग का इंद्रिय अनुभववाद हयूम मैं जाकर संदेहवाद मैं परिणत हो गया| कांट ने सर्वप्रथम ज्ञान की आलोचना को ही अपना लक्ष्य बनाया| ज्ञान की आलोचना किए बिना, ज्ञान की उत्पत्ति, प्रामाणय और सीमा को जाने बिना तत्व समीक्षा करना व्यर्थ है| कांट कहते हैं ना तो बुद्धिवादियों के समान ज्ञान में अंधविश्वास करना चाहिए और न इंद्रिय अनुभववादियों के समान ज्ञान में आत्मघाती और अनावश्यक संदेह करना चाहिए| बुद्धिवाद के अंधविश्वास और इंद्रियअनुभववाद के आत्मघात संदेह इन दोनों से बचकर ज्ञान की उत्पत्ति, प्रामान्य और सीमा की सही आलोचना को दर्शन का सर्वप्रथम और आवश्यक कार्य मानने के कारण कांट के दर्शन को समीक्षावाद अथवा आलोचनात्मक दर्शन कहा गया है| कांट के दर्शन को आलोचनात्मक दर्शन इसलिए कहा गया है क्योंकि कांट ने अपने ज्ञान सिद्धांत को रखने के पहले, अपने पूर्ववर्ती सिद्धांतों की आलोचना की तथा उनकी समीक्षा की|

कांट का समीक्षावादी ज्ञान सिद्धांत

बुद्धिवाद गणित को ज्ञान का आदर्श मानकर सार्वभौमिकता तथा अनिवार्यता को यथार्थ ज्ञान का आदर्श बनाया तथा अनुभववाद भौतिक विज्ञान विज्ञान को ज्ञान का आदर्श मानकर नवीनता को ज्ञान का आदर्श बनाया| परंतु कांट के अनुसार सचमुच यथार्थ ज्ञान में तीन गुण होने चाहिए- यानी, उसमें सार्वभौमिकता, अनिवार्यता तथा नवीनता तीनों गुणों को होना चाहिए| कांट के अनुसार यह तीनों गुण गणित विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान दोनों के ज्ञान में पाए जाते हैं| इस सिलसिले में बुद्धिवाद और अनुभववाद दोनों ने यह गलत समझा कि गणित का ज्ञान सिर्फ सार्वभौम तथा अनिवार्य होता है और उसमें नवीनता नहीं होती| ऐसा इसलिए समझा गया क्योंकि नवीनता का आधार है अनुभव और गणित का ज्ञान अनुभव निरपेक्ष होता है| परंतु कांट कहते हैं कि ऐसा समझना भूल है की गणित का ज्ञान अनुभव निरपेक्ष होता है| किसी भी ज्ञान में अनुभव तथा बुद्धि दोनों का हाथ रहता है|

ज्ञान की परिभाषा

कांट सार्वभौमिकता, अनिवार्यता तथा नवीनता तीनों को ही यथार्थ ज्ञान की कसौटी मानते हैं| इसलिए विज्ञान की परिभाषा भी कुछ इसी रूप में करते हैं ताकि इन तीनों ही गुणों का समावेश उसमें हो जाए| कांट ज्ञान को संश्लेषणआत्मक प्रागनभविक निर्णयों के एक तंत्र के रूप में परिभाषित करते हैं| निर्णय दो प्रत्ययों - उद्देश्य तथा विधेय के मेल को कहते हैं जैसे ` मेज भूरा है´ एक निर्णय है जिसमें ` मेजपन´ तथा ` भूरापन´ प्रत्ययों का मेल हुआ है| इसमें `मेज´ उद्देश्य तथा `भूरा´ विधेय है| संश्लेषणआत्मक वैसे निर्णय को कहते हैं जो अनुभव पर आधारित हो, यानी जिसमें विधेय में अनुभव के आधार पर उद्देश्य के संबंध में कोई नई बात कही जाए, सिर्फ उद्देश्य का विश्लेषण भर नहीं कर दिया जाए| संश्लेषणआत्मक निर्णयों के विपरीत कांट विश्लेषणात्मक निर्णयों को लेते हैं जिनके विधेय में उद्देश्य का सिर्फ विश्लेषण किया गया रहता है, उसके संबंध में कोई नई बात नहीं कही जाती है| `त्रिभुज तीन भुजाओं से घिरा क्षेत्र है´ निर्णय विश्लेषणात्मक है क्योंकि इसका विधेय उद्देश्य ` त्रिभुज´ का विश्लेषण मात्र है| परंतु `गुलाब लाल है´ एक संश्लेषणआत्मक निर्णय है क्योंकि ` लाली´, गुलाब के विश्लेषण से नहीं निकलती, बल्कि अनुभव के आधार पर गुलाब के साथ जोड़ा जाता है जो गुलाब के संबंध में एक नवीन ज्ञान देता है| प्रागनभविक निर्णय वैसे निर्णय हैं जिनकी सत्यता किसी विशिष्ट अनुभव तक ही सीमित नहीं हो, बल्कि जो विशिष्ट अनुभव के परे सभी स्थान, सभी काल आदि के लिए अनिवार्यत: सत्य हो यानी, संक्षेप में वैसे निर्णय जो सार्वभौम तथा अनिवार्य रूप से सत्य हो| प्रागनुभविक कहे जाते हैं| उदाहरण के लिए ` दो और दो का योग चार होता है´, ` भौतिक पदार्थों में फैलाव होता है´ आदि निर्णय प्रागनुभविक है| ऐसे ही निर्णयों के एक तंत्र को जो संश्लेषणआत्मक(नवीन ज्ञान देने वाले) तथा प्रागनुभविक(सार्वभौम तथा अनिवार्य) दोनों हो, कांट ज्ञान कहते हैं| यहां निर्णयों के तंत्र से कांट का तात्पर्य उसकी एक व्यवस्थित समष्टि से है| एक एक निर्णय अलग-अलग अपने असंबद्ध रूप में ज्ञान का परिचायक नहीं होता| जब निर्णय एक व्यवस्थित समष्टि में बंध कर एक तंत्र का निर्माण करते हैं तभी विज्ञान की संज्ञा पा सकते हैं| इसी अर्थ में ज्ञान विज्ञानों में मिलता है, क्योंकि प्रत्येक विज्ञान निर्णयों एक व्यवस्थित तंत्र है|

ज्ञान का निर्माण(संश्लेषणआत्मक प्रागनुभविक निर्णय)

मानव ज्ञान का निर्माण कांट के अनुसार दो पक्षों के सम्मिलित प्रयास से होता है| एक को वे संवेदन शक्ति तथा दूसरे को प्रतिपति या बोध कहते हैं| एक ज्ञान की वस्तु प्रदान करता है तथा दूसरा आकार| जैसे किसी भी चीज के तो पक्ष होते हैं- उसकी विषय वस्तु तथा उसका आकार, वैसे ही ज्ञान के भी दो पक्ष होते हैं| संवेदन शक्ति से ज्ञान की वस्तु प्राप्त होती है, तथा बोध से उसका आकार| ज्ञान की वस्तु के रूप में हमें संवेदनाएं प्राप्त होती हैं| यह संवेदनाएं कहीं बाहर की दुनिया से आती है जिन्हें इंद्रियों के माध्यम से मन ग्रहण करता है| परंतु मन इन संवेदनाओं को बिल्कुल निष्क्रिय रूप में ग्रहण नहीं करता| मन के अंदर संवेदनशीलता के दो प्रागनुभविक आकार हैं जिन्हें कांट दिक तथा काल की संज्ञा देते हैं| संवेदनाएं इन्हीं दो आपका रूम से छनकर मन को प्राप्त होती है| मन इन दो आकारों को दो सांचा की तरह संवेदना पर लागू करता है और इसलिए सारी संवेदनाएं मन को तथा काल के आकारों से होकर ही प्राप्त होती हैं| संवेदनाएं अपने आप में बिल्कुल असंबद्ध तथा अव्यवस्थित होती हैं| सिर्फ उन्हें प्राप्त कर लेने से ही ज्ञान का निर्माण नहीं हो जाता| उन्हें आकार देकर व्यवस्थित करना तथा निर्णयों का निर्माण करना अभी शेष रह जाता है जिस काम को मन पूरा करता है| कुछ व्यवस्था तो संवेदनाओं को मन संवेदन या प्रत्यक्षीकरण के अपने दो प्रागनुभविक आकारों- कथाकार के द्वारा ही प्रदान कर लेता है परंतु वह पर्याप्त नहीं है| संवेदनाओं को पूर्ण आकार में ढालकर निर्णय का निर्माण करना मन के उस पक्ष का काम है जिससे बोध या प्रतिपत्ती की संज्ञा दी गई है| वस्तुत: कांट के अनुसार बंद के अंदर सोचने को बारह आकार जन्मजात आकारों के रूप में मौजूद हैं| यह मन की बनावट में ही दिए हुए हैं इन्हें कांट समझ की कोटी (categories of understanding) कहते हैं| बारह आकार बारह सांचे हैं जिनमें ढल कर संवेदनाएं आकार पाती हैं| बोध के यह बारह आकार निम्नलिखित हैं- अनेकता, एकता, समग्रता, भाव, अभाव, सीमितता, कारणता, गुनार्थकता, अन्योन्यता, संभावना, वास्तविकता तथा अनिवार्यता| बौद्ध के बारह आकार बिल्कुल अनुभव निरपेक्ष हैं तथा एक प्रागनुभविक रूप में मन के अंदर मौजूद हैं| मन ग्रहण किए हुए संवेदना को अपने इन्हें आकारों में ढालकर व्यवस्थित करता है तथा निर्णयों का निर्माण करता है| इस प्रकार संवेदना ग्राह्यता तथा बोध दोनों के सहयोग से निर्णय का निर्माण होता है| यह निर्णय है संश्लेषण आत्मक इसलिए होते हैं क्योंकि अनुभव(संवेदन ग्राह्यता) पर आधारित है और सार्वभौम तथा अनिवार्य इसलिए होते हैं क्योंकि इनका निर्माण अनुभव निरपेक्ष बोध के आकारों के द्वारा होता है| क्योंकि ज्ञान में अनुभव आश्रित तथा प्रागनुभविक दोनों ही प्रकार के तत्व सम्मिलित रहते हैं, इसलिए यह ज्ञान नवीन, सार्वभौम, तथा अनिवार्य होता है| इस प्रकार कांट के अनुसार संवेदन शक्ति तथा बोध दोनों के सहयोग से संश्लेषणआत्मक प्रागनुभविक निर्णयों का निर्माण होता है|